नये चरवाहों के प्रशिक्षकों के लिये निर्देश

Download P-T studies freely from www.Paul-Timothy.net.

प्रशिक्षण देने वाले की प्रार्थनाः

प्रिय प्रभु, अपने वचन से नये चरवाहों को शिक्षा देने में सहायता कीजिए ताकि वे पवित्रात्मा की सामर्थ में उस झुण्ड की अगुवाई करने योग्य

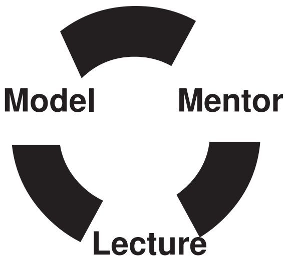

बन सकें जिसका आपने उन्हें उत्तरदायी बनाया है। हम यह प्रार्थना अपने उद्धारकर्ता यीशु के नाम से करते हैं, आमीन।

निर्देश–1 प्रशिक्षण की तीन विधियों द्वारा नये चरवाहे को प्रशिक्षण दीजिए

नमूना बनाना, विश्वासयोग्य बनाना तथा कक्षा में व्याख्यान देना, इन तीनों बातों में संतुलन बनाए रखना चाहिए।

नये चरवाहों को ऐसी कुशलता से प्रशिक्षित कीजिये कि यह सुनिश्चित हो जाए कि उपरोक्त तीनों बातों में संतुलन बनाए रखने से उनके झुण्ड में निरंतर उन्नति होगी, जैसेकि प्रभु यीशु व प्रेरितों के युग में हुई थी।

प्रथम विधि : चरवाहों को नमूना बनाने की युक्तियाँ

सप्ताह के मध्य नये अगुवों को चरवाही से संबंधित कौशल का प्रदर्शन करके दिखाएं।

द्वितीय विधि : छोटे समूहों का गठन कीजिए

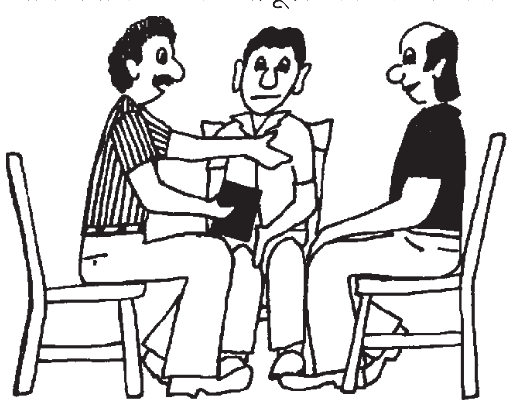

छोटे समूहों में एकत्रित हों ताकि आप उनसे सूचनाएं प्राप्त कर सकें कि उनके झुण्ड में क्या क्या कार्य किये जा रहे हैं। तब प्रत्येक झुण्ड की आवश्यकता के अनुसार परमेश्वर का वचन प्रस्तुत कीजिए। अगले सप्ताह के कार्यक्रम बनाने में जिन्हें प्रशिक्षण लेने वाले प्रार्थी व उनके झुण्ड के लोग प्रस्तुत करेंगे, सहायता कीजिए।

द्वितीय विधि : बड़े समूह में व्याख्यान दीजिए

समय समय पर बड़े समूहों में सेमिनारों का आयोजन करके शिक्षा दीजिए।

आईए इन तीनों विधियों पर विस्तार से विचार करें

प्रथम विधिः प्रशिक्षणार्थीयों के लिये चरवाही कार्य से संबंधित कला–कौशलः

चरवाही से संबंधित कार्यो का प्रदर्शन करके प्राशिक्षणार्थीयों को दिखाएं क्योंकि वे नहीं जानते हैं कि चरवाही का कार्य कैसे किया जाता है, जैसाकि यीशु व उनके शिष्यों ने अपने युग में अपने शिष्यों को चंगाई द्वारा, परामर्श द्वारा व अपनी शिक्षा द्वारा प्रदर्शन करके दिखाया था।

चरवाही से संबंधित कौशल की शिक्षा न केवल आराधना सभा में ही दीजिए बल्कि सप्ताह में जब कार्य करते हैं तब भी उन्हें सिखाएं। प्रशिक्षणार्थी कभी कभी प्रशिक्षक के साथ रहकर भी सीख सकता है जबकि वह अपने झुण्ड में सेवा कर रहा हो तथा कभी–कभी प्रशिक्षक भी प्रशिक्षार्थी के पास जाकर उसके नये झुण्ड की रखवाली करने में उसकी सहायता कर सकता है

द्वितीय विधि :छोटे स्थानीय समूहः

प्रशिक्षाणार्थीयों को दो से पांच सदस्यों के छोटे झुण्ड के रूप में एकत्रित होना चाहिए। यह आवश्यक है कि समूह छोटा ही होवे, इससे प्रशिक्षक को प्रत्येक व्यक्ति के बारे में जानने का अच्छा अवसर मिल सकेगा कि उन लोगों के झुण्ड में क्या कार्य किया जा रहा है, और यह भी जाना जा सकेगा कि प्रत्येक की क्या आवयकताएं हैं और सेवा की क्या संभावनाएं वहां उपलब्ध ा हैं। साधारणतः दो या तीन कलीसियाओं के प्रशिक्षाणार्थी प्रशिक्षक के साथ इस प्रकार से मिल सकते हैं।

तृतीय विधिः बड़ी सभा में सामान्य तथ्यों को सिखाएं जो सभी कलीसियाओं पर लागू हों।

जब संभव हो तो विस्तशत क्षेत्र लेकर चरवाहों के बड़े समूह में एकत्रित हों और ऐसी शिक्षा दें जो सब पर एक समान लागू हो सके और सबके लाभ की बातें हों।

अपनी योजनाएं लिखें

कृपया सहायता के लिये प्रभु से प्रार्थना कीजिए, तत्पश्चात् अपनी योजना लिखिए जो उपरोक्त तीन प्रकार की शिक्षाओं के अनुसार हो अर्थात् ऐसी योजना हो जैसी प्रभु यीशु व उनके शिष्यों द्वारा काम में लाई गई थी।

निर्देश 2-ऐसा अध्ययन चुनें जो प्रशिक्षणार्थी के झुण्ड की कमी को पूरा करे

- प्रशिक्षक तथा प्रशिक्षणार्थी दोनों को आवश्यक है कि वे छोटे समूहों में एकत्रित हों तथा पौलुस-तिमुथि पाठ्यक्रम की विषय-सूची का उपयोग करते हुए अध्ययन पाठों को चुनें।
- अभी उन उपयुक्त पाठों को जो पौलुस-तिमुथि पाठ्यक्रम की विषय-सूची से नमूने के रूप में लिए गये हैं चुनें। विवरण नीचे दिया जा रहा है। जिन बातों की आपके झुण्ड को आवश्यकता है उसके सामने कोष्ठक में चिन्ह लगाएं।

सेवकाईयां तथा अध्ययन हेतु विषय-सूची से लिए गये नमूने

सेवकाईयां नये नियम पर आधारित कलीसियाई गतिविधियां	**नये चरवाहों के लिये अध्ययन के नमूने** यहां एक सेवकाई के लिये एक अध्ययन दियाहै
{} पी०टी०एल०टी० की भूमिका	नये प्रशिक्षक के लिये निर्देश *AOf*
{} निश्चय,परामर्श व भेंट करना	भय व लज्जा पर विजय पाना *A2a*
{} बाइबल सर्वेक्षण, व्याख्या व लागू करना	उत्पत्ति तथा पूर्वज *P2a*
{} कलीसिया स्थापना, प्रार्थना-समूह बनाना	नई कलीसिया की स्थापना तथा समूह *C7a*
{} चेले बनाना, खीस्त का आज्ञापालन करना	यीशु की आज्ञापालन, हमारा महान राजा *F3a*
{} सुसमाचार-प्रचार,बपतिस्मा,उद्धार	सामर्थ सहित यीशु की साक्षी देना *P5a*
{} देना, भंडारीपन	उदारतापूर्वक देने वाला बरनाबास *G1a*
{} मसीह में उन्नति, परिवर्तित चरित्र	परिवर्तन तथा धर्मी चरित्र *C1a*
{} ऐतिहासिक महत्वपूर्ण घटनाएं	मसीही धर्म का इतिहास, प्रथम 400 years H4a1
{} प्रेम,परिवार,दूसरों की सेवा, संगति	दूसरों की सेवा करके दया दिखाना-*L4a*
{} विभिन्न संस्कृतियों में सेवा करने वाली मिशनें	तिरस्कृत लोगों में मिश्नरी भेजना-*S2a*
{} आयोजन करना, अगुवाई करना	आत्मिक बरदानों द्वारा सेवा करना-S6a
{} प्रार्थना, विश्वास व चंगाई	यीशु के नाम में चंगा करना-H2a
{} बाइबल आधारित शिक्षा देना व कहानी सुनाना	बाइबल के अनुसार बच्चों को पढ़ाना-Tla
{} अगुवों का प्रशिक्षण, सिखाना	पौलुस व यीशु समान नये अगुवे बनाना-T3a
{} आराधना,प्रभुभोज,विशेष उत्सव	हारून व अन्य आराधना अगुवे-W2a

एक अच्छा प्रशिक्षक नये विश्वासियों के समूह में चरवाहे बुजुर्ग नियुक्त करता व उन्हें प्रशिक्षित करता है। वह सदा उनकी सहायता करता है ताकि उनके झुण्ड की कमियां दूर हों (तीतुस १:५)। कलीसिया में किस बात की कमी है, यह जानने के लिये सबसे पहले उनकी बात सुनिए व उनसे पूछिए कि उनके झुण्ड में क्या कार्य किया जा रहा है और क्या अभी तक नहीं किया गया है।

हम प्रशिक्षकों को आवश्यक है कि हम पहले उन लोगों की बातें ध्यानपूर्वक सुनें जिनको हम प्रशिक्षण देते हैं :

- पौलुस-तिमुथि अध्ययनमाला एक क्रमबद्ध पाठ्यक्रम नहीं है, जिसको प्रशिक्षाणार्थी क्रमानुसार पहले प्रथम पाठ पूरा करे तत्पश्चात् द्वितीय व तृतीय पाठ करे फिर अंतिम पाठ तक पहुंचे, अपितु यह एक ऐसा पाठ्यक्रम है जिसको उसे अपनी तत्कालिक आवश्यकतानुसार विषय चुनने होते हैं ताकि उसके जीवन में जो कमी है वह पूरी हो सके। मत्ती १३:५२ के अनुसार प्रभु यीशु चाहते हैं कि शास्त्री (शिक्षक) विभिन्न प्रकार के श्रोत प्रयोग में लाएं, यीशु ने कहा, "हर एक शास्त्री जो स्वर्ग के राज्य का चेला बना है, उस गृहस्त के समान है जो अपने भण्डार से नई और पुरानी वस्तुएं निकालता है।"
- प्रत्येक अध्ययन सामग्री में कुछ पाठ नए चरवाहों से संबंधित दिये गये हैं तथा अन्य कुछ पाठ उन्हीं विषयों पर बच्चों से संबंधित हैं।

अपनी योजनाएं लिखिए

आपके झुण्ड की देखभाल संबंधी कार्यों में सहायता के लिये व नये झुण्डों की देखभाल संबंधी सेवकाई के लिये आप किन लोगों को प्रशिक्षित करने की योजना बना रहे हैं :

___

लिये आत्माएं जीतने का कार्य करेंगे, अपनी चरवाही की सेवा आरम्भ कर आप इन लोगों की किस प्रकार सहायता करेंगे कि वे तुरन्त अपने परिवार में अथवा जिन लोगों के मध्य वे मसीह ले सकें :

___

___

___

___

___

यदि कोई आपको प्रशिक्षण देना चाहे तो उपरोक्त कौन सी सेवकाई में आप प्रशिक्षण लेना चाहेंगे, उसी सेवकाई से संबंधित अध्ययन आपको उपलब्ध कराया जाएगा।

उस सेवकाई का नम्बर क्या है जिसे आप चुनते हैं? (प्रत्येक सेवकाई के सामने उसका नम्बर दिया गया है) ....

निर्देश 3ः सिखाते समय उन बातों पर विशेष बल दीजिए, जिन पर पवित्रशास्त्र बल देता हैः

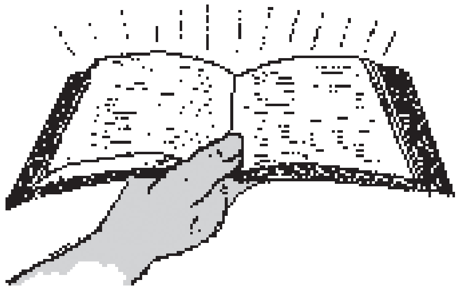

प्रशिक्षण से संबंधित कार्य में संत पौलुस और प्रभु यीशु हमारे आदर्श हैं। हम अगुवों को प्रशिक्षित करने के लिये उन्हीं बातों का पालन करते हैं जिनका पालन पौलुस और प्रभु यीशु ने किया था। नये चरवाहे अपने प्रशिक्षक के साथ प्रतिमाह एक या दो बार परस्पर भेंट करें ताकि प्रशिक्षक जान सके कि झुण्ड में किन बातों की आवश्यकता है, तत्काल ही उन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये कदम उठाए जाने चाहिए। यदि झुण्ड नया है तो प्रशिक्षाणार्थी अपने प्रशिक्षक के साथ समय समय पर भेंट कर सकता है।

- सिखाने का कार्य केवल नये चरवाहों के लिये ही है। पुराने व परिपक्व अगुवे तभी आ सकते हैं जब उन्हें विशेष सलाह की आवश्यकता पड़े लेकिन वे कभी-कभी आयोजित विशेष सेमिनारों में उपस्थित होकर शिक्षा ग्रहण करते रह सकते हैं।
- साधारणतः अगुवा उन्हीं नये झुण्डों के चरवाहों को शिक्षा देता है जो उसने या उसके झुण्ड ने तैयार किए हों, जैसाकि २तीमुथियुस २ः२ में लिखा है।
- यह आवश्यक नहीं कि सिखाने वाला वृद्ध तथा अधिक अनुभवी हो। संभव है वह उनसे जिन्हें वह शिक्षा दे रहा है, मात्र एक माह ही आगे का विश्वासी हो, नये कार्यकर्ता के समान वह सहानुभूति के साथ अच्छा कार्य कर सकता है। ऐसी दशा में उसे अपने से ज्यादा अनुभवी अगुवों से भेंट करते रहना चाहिये।

पौलुस-तिमुथि अध्ययनमाला के अनुसार सिखाने का कार्य करना सरल होता है। यदि आप इन नये शिक्षकगणों को नए-झुण्डों से संबंधित अध्ययन-सामग्री उपलब्ध कराएंगे तो वे उसके अनुसार नये चरवाहों को प्रशिक्षित कर सकेंगे। अतः पौलुस-तिमुथि जैसे पाठ्यक्रम का उपयोग कीजिये और उनका अनुवाद प्रशिक्षार्थी की भाषा में कीजिये। सिखाने का कार्य साधारणतः अस्थाई होता है। नई कलीसियाओं के नये चरवाहे, नये विश्वासियों के साथ, "बच्चों" के समान होते हैं जो "शिशु-झुण्डों" के अगुवों के होते हैं। उनकी प्रायः उसी प्रकार देखभाल करने, सिखाने व उनकी परम अवश्यकताओं की पूर्ति करने की आवश्यकता होती है जिस प्रकार एक नवजात शिशु के लिये होती है।

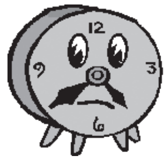

- नये अगुवों को उचित प्रकार से सिखाने में पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है। इसी कारण से आपको चाहिए कि आप समय समय पर बड़े समूहों के लिये सेमिनारों का आयोजन करते रहें। पौलुस ने एक पिता के समान तीमुथियुस व तीतुस को सिखाने में पर्याप्त समय लगाया था। जब वे परिपक्व बन गये और निरंतर देखभाल करने की उनके लिये आवश्यकता न रही, तब पौलुस ने उन्हें अन्य लोगों को सिखाने का काम सौंप दिया।
- जब तीमुथियुस और तीतुस का पौलुस द्वारा प्रशिक्षण-कार्य समाप्त हो गया, तब यह श्रृंखला अन्य नए चेलों तक पहुंची। जिस प्रकार नए जन्में हुए बच्चों को व्यक्तिगत रीति से सिखाने व देखभाल करने की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार इन नये विश्वासियों को भी पड़ी जब तक कि वे नये नियम की आज्ञाओं के अनुसार सेवा करना न सीख गये।

अपनी योजनाएं लिखिए

आप किसे सिखाना आरम्भ कर रहे हैं?

कार्य कब आरम्भ करेंगे ? --

निर्देश 4: किसी के प्रति उत्तरदायी बनें तथा किसको उत्तरदायित्व सौंपें :

प्रभु के अगुवे को अन्य अगुवों के प्रति उत्तरदायी होना चाहिये। आपको तथा अन्य अगुवों को एक दूसरे की सेवकाई को जांचते रहना चाहिये ताकि एक दूसरे की सहायता व उन्नति होती रहे। इस प्रकार की एक दूसरे के प्रति प्रेमपूर्ण जिम्मेदारी सभी सदस्यों के लिये आशीष व आनन्द का कारण होती है।

अन्य अगुवों के साथ आपको समय समय पर भेंट करते और अपने कार्यो की सूचना देते रहना चाहिये कि आपने क्या कुछ किया है। अन्य अगुवों की जांच के बिना कार्य करते रहना हानि का कारण हो सकता है।

संत पौलुस पहले पहल उन अगुवों के प्रति उत्तरदाई था जो येरूशलेम में रहते थे। (गलातियों २ः१–२)।

उसके बाद पौलुस और बरनाबास अंताकिया की कलीसिया को अपने कार्यों की सूचना देते थे जिसने उन्हें अन्यजातियों में सुसमाचार सुनाने के लिये भेजा था। (प्रेरि० १३ः१–३ व १४ः२६ः२८)।

आपको तथा अन्य अगुवों को प्रायः एक दूसरे को सिखाते (कुलुस्सियों ३ः१६) तथा एक दूसरे के सामने आपने अपराध स्वीकार करते रहना चाहिए (याकूब ५ः१६)। आपको अन्य अगुवों के परामर्श एवं समीक्षाओं पर आदर के साथ ध्यान देना चाहिये।

प्रत्येक अगुवे को ऐसे अनुशासन की आवश्यकता है, जिससे उन्हें ज्ञात होता रहे कि उनकी सेवकाई बाइबल–धर्मशास्त्र के अनुसार हो रही है या नहीं ? इससे आपको अपने अगुवेपन की योग्यताओं को निखारने में तथा लोगों पर आपके स्वार्थपूर्ण एवं भ्रष्ट नियंत्रण को दूर रखने में भी सहायता मिलेगी।

अपनी योजनाएं लिखिए

आपको कौन सिखाएगा ? ---

पहले कितनी बार आप लोग आपस में मिलेंगे ? -------------------------

यदि आपको शिक्षा देने के लिये कोई उपलब्ध नहीं है तो ऐसे व्यक्ति से मिलें जो पौलुस–तिमुथि पाठ्यक्रम का प्रयोग कर रहा हो। यदि प्रयत्न करने पर भी ऐसा जन न मिले तो स्वयं २ तीमुथियुस २ः२ के अनुसार, यह कार्य आरम्भ कर दें अर्थात् दूसरों को सिखाएं।

निर्देश 5 उन्नति के लिये बाइबल के निर्देशों का पालन कीजिये

जब भी प्रेरितों ने प्रभु यीशु के निर्देशों का पालन किया कलीसिया ने उन्नति की। जब चरवाहे अपने आज्ञापालन की आधारशिला प्रभु यीशु पर बनाएंगे तो वह आज भी वही कार्य करेगा। जिस प्रकार प्रभु यीशु ने व उनके चेलों ने शिक्षा दी, उसी प्रकार आप भी अपने झुण्ड को सिखाईए तथा झुण्ड के नये अगुवों को प्रशिक्षित कीजिये। उदाहरणार्थ पौलुस ने तीमुथियुस को प्रशिक्षित किया जिसने विश्वासियों को तथा अन्य लोगों को प्रशिक्षित किया जिसका परिणाम यह हुआ कि अनेकों कलीसियाएं स्थापित हुई! (२तीमु० २:२)।

यीशु व उनके शिष्यों ने सिखाने के द्वारा ही नये अगुवों को प्रशिक्षण किया। जिस तीव्र गति से नई कलीसियाएं स्थापित होती हैं, सिखाने का कार्य उसी गति से नये अगुवों को प्रशिक्षित करने में आपकी सहायता करता है क्योंकि हर नया चरवाहा अपने झुण्ड में अन्य नये चरवाहे बनाता है।

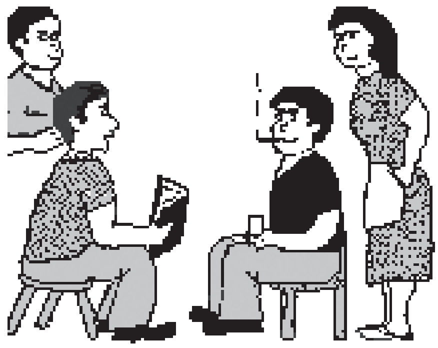

नये चरवाहे अपने से अनुभवी चरवाहे की सी चाल चलते हैं, उससे कार्य करने का कौशल सीखते हैं और फिर वचन को तुरन्त उन लोगों के मध्य लागू करते हैं जहां वे सेवा करते हैं। जैसाकि १ कुरिन्थियों ११:१ में लिखा है, "तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं।"

प्रभु यीशु ने बल दिया कि उसके राज्य में बढ़ना और फलवन्त होना बीज के समान है, यदि हम अच्छी भूमि में बीज डालेंगे तो वह सौ गुना तक फलवन्त होगा। (मरकुस ४)।

झुण्ड को फलवन्त होने के लिये ध्यान रखें कि प्रत्येक प्रशिक्षाणार्थी शीघ्र अन्य लोगों को सिखाना आरम्भ कर सके। प्रशिक्षण के साथ साथ प्रचार कार्य भी चलता है। निरंतर प्रार्थना, सुसमाचार-प्रचार तथा परमेश्वर की सहायता से आप नये सेवक व उनकी नई कलीसियाएं स्थापित कर सकते हैं।

ऐसे लोगों के मध्य सेवा आरम्भ करने की खोज कीजिये जो आपका स्वागत करें। जिस स्थान पर लोग सुसमाचार का तिरस्कार करें, वहां यीशु की आज्ञानुसार अपने पांव की धूल झाड़कर आगे बढ़ जाएं। इसका अर्थ यह नहीं कि घर छोड़कर चले जाएं, पर ऐसे लोगों के पास चले जाएं तो प्रभु ने तैयार कर रखे हैं। साधारणतः निर्धन-वर्ग के लोग सुसमाचार का आदर करते हैं।

अतः जिस प्रकार से प्रभु यीशु व उनके शिष्यों ने शिक्षण-कार्य किया था वह प्रभावशाली है और झुण्ड के फलवन्त होने में सहायक है। प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को सत्यता का और शिक्षाओं का ऐसा पैकेट दिया जो हलका था और जिसे सरलता से दूसरों तक पहुंचाया जा सकता था, जैसा कि रिले रेस में एक डंडा दिया जाता है जिसे वे दूसरे तक पहुंचाते हैं। परमेश्वर एक दूसरे का ध्यान रखने वाले संबंधों को जो प्रशिक्षक व प्रशिक्षार्थी के मध्य पाए जाते हैं, प्रयोग करता है, कार्य को सरल बनाता है ताकि वह डंडा दूसरों तक पहुंचाया जाए, जिससे कलीसियाएं स्थापित हों और प्रभावशाली अगुवे निर्मित हों।

एक अच्छा शिक्षक नये अगुवे को ऐसे उपायों द्वारा प्रशिक्षित करता है जिससे वह सरलता व शीघ्रता के साथ अनुकरण कर सकता है, और दूसरों को भी प्रशिक्षित कर सकता है। जब आप चरवाही के कौशल सिखा रहे हों तो ऐसे यन्त्रों व साधनों का प्रयोग न कीजिये जो आपके शिष्यों के पास न हों।

पवित्रशास्त्र में सिखाने का काम एक श्रृंखला के समान चलता है, एक व्यक्ति दूसरे को व दूसरा तीसरे को सिखाता है, इस प्रकार यह कार्य चलता रहता है। इसके कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं :

यित्रो ने मूसा को प्रशिक्षित किया।

मूसा ने यहोशु तथा **इस्राएल के प्रचीनों** को प्रशिक्षित किया। मूलतः परमेश्वर ने दस आज्ञाएं इस्राएल के प्राचीनों को दी थीं। लोगों को सिखाने का कार्य छोटे छोटे समूहों में हुआ था (देखें निर्गमन अध्याय १८-२०)।

तब **यहोशु** ने अन्य सेनाध्यक्षों को प्रशिक्षित किया।

देबोरा ने बाराक को प्रशिक्षित किया। जिसके परिणामस्वरूप बाराक को युद्ध में परमेश्वर की महिमा के लिये भारी विजय मिली।

एली महायाजक ने शामूएल को प्रशिक्षित किया।

तब **शमूएल** ने **शाऊल** तथा **दाऊद** को प्रशिक्षित किया।

अहीतोपेल तथा **नातान** याजकों ने भी **दाऊद** राजा को प्रशिक्षित किया।

दाउद ने इस्राएल को संगठित राष्ट्र के रूप बनाने के लिये अपनी सेना के कमांडरों एवं राजकीय कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया।

दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को भी प्रशिक्षित किया था।

सुलैमान ने **शीबा की महारानी** को प्रशिक्षण दिया व बताया। वह अपने लोगों में जब वापस गई तो सुलैमान की बुद्धिमानी नीतिवचनों के रूप में ले गई जो परमेश्वर के नियमों का प्रतीक है।

तब **एलियाह** ने एलीशा को सिखाया या प्रशिक्षित किया।

एलीशा ने राजा **यहोशुवा** व अन्यों को प्रशिक्षित किया।

दानिएल ने राजा नबूकदनेस्सर को प्रशिक्षित किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि इस राजा ने परमेश्वर के सामने स्वयं के विनम्र बनाया ।

तब **मोर्दकै ने** ऐस्तर रानी को प्रशिक्षित किया।

रानी **एस्तर** ने राजा क्षयर्ष को प्रशिक्षित किया, जिसके परिणामस्वरूप परमेश्वर के लोगों को सुरक्षा व स्वतन्त्रता मिली।

नये नियम में **यीशु** ने अपने १२ शिष्यों को प्रशिक्षित किया जिन्होंने प्रथम मसीही कलीसिया की स्थापना की।

तब इन **बारहों** ने संत पौलुस सहित **सैकड़ों को** प्रशिक्षित किया।

पौलुस ने तीमुथियुस व तीतुस को प्रशिक्षित किया जिन्होने अन्य अनेकों को सिखाया।

तीमुथियुस ने इपफ्रास को व अन्य अनेक विश्वासियों को प्रशिक्षित किया।

इपफ्रास तथा अन्य विश्वासी जनों ने दूसरों को भी सिखाया (२तीमु० २:२)। जिसके परिणामस्वरूप आशिया में दर्जनों कलीसियाओं की स्थापना हुई।

फिलिप्पुस ने इथोपिया के मंत्री को प्रशिक्षित किया। उस मंत्री ने खीस्त को स्वीकार किया तथा उस मरूस्थल में बपतिस्मा भी लिया।

तब हम पढ़ते हैं कि **प्रिस्किल्ला व अक्विल्ला** ने अपुल्लौस को प्रशिक्षित किया, इससे कलीसियाई सेवकाई में सुधार हुआ।

अपनी योजनाएं लिखिए

यदि आपने कभी भी पारंपरिक रूप से कक्षा में शिक्षा देने के अतिरिक्त किसी अन्य उपाय द्वारा लोगों को शिक्षा नहीं दी है तो कृपया इसी समय क्षणभर ठहरकर प्रार्थना कीजिये कि प्रभु आपकी अन्य प्रकार से भी शिक्षा देने में सहायता करे।

यदि आपमें योग्यता नहीं है और समय भी नहीं है कि आप अपने कार्यक्रम में सिखाने का कार्य सम्मिलित कर सकें, तो प्रार्थना कीजिये कि प्रभु आपको दिखाये कि किसे आप यह उत्तरदायित्व सौंपें, जिससे कि आपके झुण्ड में सिखाने या प्रशिक्षित करने का कार्य ठीक उसी तरह जारी रह सके जिस प्रकार प्रभु यीशु व उनके शिष्य प्रशिक्षण दिया करते थे।

२ तीमुथियुस २:२ के अनुसार एक ही सेवक एक समय में प्रशिक्षण लेने वाला और दूसरे समय में नये लोगों को प्रशिक्षण देने वाला भी हो सकता है। इस प्रकार के प्रशिक्षण से आपका झुण्ड तथा नये झुण्ड तीव्र गति से नये अगुवों को तैयार करने योग्य बनेंगे और जीवित रहेंगे। जिन लोगों को आप प्रशिक्षित करेंगे वे शीघ्र ही दूसरों को भी प्रशिक्षित करने योग्य बनते रहेंगे। यदि आप ऐसे सेवकों को जानते हैं जो दूसरों को प्रशिक्षित कर सकते हैं, उनके नाम लिखिए यदि अभी तक आप उनके नाम नहीं जानते हैं तो पता लगाईए।

____

अन्य उन लोगों के भी नाम लिखिये जो शिक्षक बन सकते हैं तथा दूसरों को चरवाहे बनानें में आपकी सहायता कर सकते हैं।

____

____

निर्देश 6 विवाहित अगुवों को अपनी पत्नी व बच्चों की देखभाल करना आवश्यक है

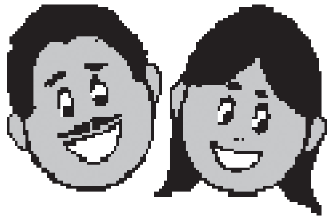

जो विश्वासी अगुवे अपने घराने की चिन्ता नहीं करते हैं उनके विषय में संत पौलुस ने यह चेतावनी दी है, "पर यदि कोई अपनों की और निज करके अपने घराने की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है।" (१ तीमुथियुस ५:८)।

एक सच्चा चरवाहा अपने घर ही की चिन्ता करके चरवाही का कार्य आरम्भ करता है। अनेकों कलीसियाओं एवं परिवारों को संकटों का सामना करना पड़ता है क्योंकि उनके द्वारा अन्य कामों में अधिक समय व्यतीत किया जाता है और परिवारों में पत्नी व बच्चों की उपेक्षा कर दी जाती है।

अपनी योजनाएं लिखिए

आप यह सुनिश्चित करने के लिये कि आप अपनी पत्नी व बच्चों की अच्छी देखभाल करते हैं क्या कार्य करेंगे :

____

____

____

____

____

निर्देश 7 प्रशिक्षाणार्थी परमेश्वर के वचन में "सोने" को खोजें

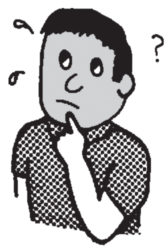

हर चरवाहे की सहायता कीजिये कि वह जागरूक सीखने वाला बने न कि केवल निष्क्रिय रूप से सुनने या पढ़ने वाला बने। प्रत्येक चरवाहे को वचन से सच्चाईयां खोजबीन करके निकालनी चाहिये जिनकी उसके झुण्ड को आवश्यकता है, उसे प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिये कि कोई आकर उसे प्रत्येक व्याख्या समझाये या सिखाए।

वे बातें न सिखाएं जो विध्यार्थी स्वयं सीख सकता है।

उनसे प्रश्न पूछिये, इससे उन्हें सहायता मिलेगी कि परमेश्वर उनसे व उनके झुण्ड से क्या चाहता है। पौलुस-तिमुथि पाठ्यक्रम में उनके लिये अनेकों सुझाव दिये गये हैं जिन्हें वे बाइबल में खोज सकते हैं।

निर्देशः8 शिक्षणकार्य करते समय कक्षा में पांच बातों का पालन कीजिये

ये पांच बातें इस प्रकार हैं : प्रार्थना, सुनना, योजना बनाना, दोहराना तथा करने के लिये कार्य सौंपना

1) प्रशिक्षण कार्य करने से पहले, प्रशिक्षण कार्य करते समय तथा कार्य करने के बाद प्रार्थनाएं कीजिएः

सत्र आरम्भ होने पर प्रत्येक के लिये प्रभु के मार्गदर्शन के लिये प्रार्थना करें।

सत्र के दौरान जब आप प्रश्न हल करें, या किसी निर्णय को लें या किसी समस्या का समाधान कर रहे हों जिसमें आपको परमेश्वर की बुद्धि की आवश्यकता हो, तो प्रार्थना करें।

फिर सत्र के अन्त में अपने लिये व अपने झुण्ड के लिये प्रार्थना करें कि प्रभु सामर्थ देवे कि आप उन योजनाओं अथवा बातों का पालन कर सकें जिन पर विचार विमर्श किया है।

2) प्रत्येक प्रशिक्षार्थी की बात सुनें। प्रत्येक जन बताए कि उनके झुण्ड में क्या किया गया है।

नये चरवाहों से निवेदन कीजिये कि वे अपनी सफलताओं व असफलताओं की रिपोर्ट दें

फिर जांचिए कि पिछले सत्र में उन्होंने क्या रिपोर्ट दी थी।

3) प्रत्येक जन के फील्ड-कार्य की योजना बनाएं।

हर प्रशिक्षार्थी की यह योजना बनाने में सहायता कीजिए कि वह तथा उसका झुण्ड अगले महिने या अगले सप्ताह के दौरान क्या कार्य करने वाले हैं।

प्रशिक्षार्थियों ने जो रिपोर्ट दी हो, उसके अनुसार उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कदम उठाएं।

उन बातों को लिख लीजिए जिन्हें करने के लिये प्रशिक्षार्थी तथा उसका झुण्ड सहमत हैं।

जो समस्याएं सामने आती हैं उन पर विचार करने में समय नष्ट न करने का प्रयत्न कीजिए। हमेशा नई गतिविधियों की योजना बनाईए।

शैतान द्वारा उठाई गई समस्याओं से निराश न हों, उनका सामना करें। उन गतिविधियों को आरम्भ कीजिए जिन्हें झुण्ड ने अभी तक नहीं किया है, झुण्ड को सामर्थी बनाने वाले कार्य करने का प्रयत्न कीजिए। सकारात्मक बातों पर ध्यान लगाते हुए झुण्ड की आत्मिक उन्नति कीजिए।

मेरी धुन मे नाचते रहो

प्रशिक्षण देने वाले व प्रशिक्षण लेने वाले दोनों जनों को इन योजनाओं की प्रतिलिपि अपने पास रखना चाहिये तथा अगले सत्र में उन योजनाओं पर विचार करने के लिये अपने साथ रखना चाहिये।

4) जो अध्ययन पिछली बार कक्षा में किया गया था उसे दोहराईए

प्रशिक्षण लेने वालों से पूछिए कि उन्होंने अब तक क्या सीखा है। उन्हें बताने का अवसर दीजिए।

यदि उन्होंने अच्छी तरह अध्ययन नहीं किया हो तो पुनः अध्ययन करने का परामर्श दीजिए। उसे अगला अध्ययन न दीजिए जब तक कि वह पिछला अच्छी तरह न सीख ले। उन्होंने क्या कुछ सीख लिया है, इस विषय में उन्हें बातचीत करने दीजिए।

5) तत्कालिक आवश्यकताओं से मेल खाते हुए, एवं सेवा के अवसर प्रदान करने वाले अध्ययन उन्हें दीजिए।

प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को एक समान अध्ययन न दीजिए। उन्हें दी जाने वाली अध्ययन सामग्री उनके झुण्ड की आवश्यकताएं पूरी करने वाली तथा उन्हें सेवा के अधिक अवसर प्रदान करने वाली हों।

प्रत्येक नये विद्यार्थी को एक बार में एक ही अध्ययन दें, अन्यथा आप उनसे लंबे समय तक न मिल पाएंगे।

अपनी योजनाएं लिखिए

कृपया उपरोक्त पॉचों बातों को याद कर लीजिए जिन्हें आप अपने प्रशिक्षक के साथ कक्षा में करेंगे। उन्हें अपनी स्मरणशक्ति का प्रयोग करके नीचे लिखें :

1- ---

2- ---

3- --

4- --

5- --

अपने प्रशिक्षार्थियों के लिये आप किस प्रकार से पौलुस-तिमुथि अध्ययनमाला प्राप्त करेंगे ?

____

____

____

____

निर्देश- 9 पौलुस-तिमुथि अध्ययनमाला का प्रयोग इस प्रकार कीजिए जिससे तुरन्त इसका पालन हो :

इस अध्ययनमाला में नये अगुवों की अध्ययन सामग्री में तीन भाग हैं :

1- बाइबल-अध्ययन द्वारा स्वयं को तैयार करना

2- आने वाले सप्ताह की गतिविधियों की योजनाएं बनाना

3- आने वाली आराधना-सभा की योजना बनाना

1) बाइबल अध्ययन द्वारा स्वयं को तैयार करना :

जो कुछ आप करते हैं और उसे कैसे करते हैं, इन बातों का आधार पवित्रशास्त्र होना चाहिये।

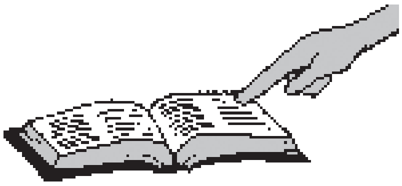

परमेश्वर का वचन न केवल आपके लिये अध्ययन का एकमात्र श्रोत ही हो अपितु यह आपके लिये शिक्षा देने, सुसमाचार-प्रचार करने आराधना करने, आदि का मार्गदर्शक भी होना चाहिये।

प्रत्येक पाठ में उन बातों की सूची दी गई है जिन्हें आपको बाइबल में खोजना होगा। आप उन बातों को आगामी आराधना के समय सिखा सकते हैं और उन बातों के संबंध में प्रश्न पूछ सकते हैं जिन्हें बाइबल में खोजने के लिये पाठ में निर्देश दिया गया था।

2) आने वाले सप्ताह की गतिविधियों की योजनाएं बनाना

प्रत्येक पाठ में उन ऐच्छिक गतिविधियों की सूची दी गई है जिन्हें आप तथा अन्य विश्वासीगण सप्ताह के दौरान प्रयोग कर सकते हैं। ऐसी गतिविधियों का चयन कीजिये जो स्थानीय संस्कृति के अनुकूल तथा विश्वासियों की तत्कालिक आवश्यकताएं पूरी करने वाली हों। अन्य गतिविधियों को छोड़ दें।

जो योजनाएं आप बनाते हैं, उनकी सूचना एवं पूरा विवरण आराधना सभा के समय लोगों को दें ताकि वे सब विश्वासी भी सम्मिलित होकर अपनी विभिन्न सेवाओं द्वारा खीस्त की सेवा का अवसर पा सकें।

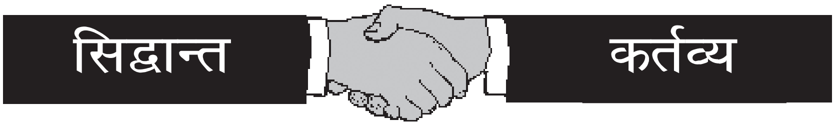

आराधना के समय जो कुछ आप सिखाते हैं उससे विश्वासीगण तैयार हो सकें कि उन गतिविधियों को व्यवहारिक रूप दे सकें। यदि कोई व्यक्ति जैसा सिखाता है वैसा कार्य न करे, तो वह पवित्र वचन का तिरस्कार करता है, (याकूब १:२२, इफिसियों २:८-१०, २तीमुथियुस ३:१६-१७)।

सप्ताह के दौरान विश्वासीगण कौन से आशीषपूर्ण कार्य करेंगे, अपने सहयोगियों के साथ इसकी योजना समय से पहले बना लीजिए:

- एक दूसरे के लिये (गलतियों ५:१३)
- प्रत्येक परिवार के लिये (इफिसियों ५:२१-३३, ६:१-४)
- आसपास के समुदाय के लिये (मत्ती ५:१३-१४)
- अन्य कलीसियाओं के लिये (प्रेरि० १५:४१)

3) आराधना समय की योजना बनाना।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि प्रशिक्षार्थियों के झुण्ड से बच्चों सहित हरएक आराधना में भाग लेवे तथा अपने वरदानों को प्रयोग करके एक दूसरे की आत्मिक उन्नति का कारण बने। पौलुस–तिमुथि अध्ययनमाला के बच्चों से संबंधित पाठ, बच्चों को बाइबल–कहानियां नाटक के रूप में प्रदर्शित करने,एंव भजनसंहिता से बाइबल पद रटने तथा प्रश्न–उत्तर करने के लिये तैयार करते हैं।

स्मरण रखें कि शैतान नये चरवाहों के कानों में फुसफुसाता है कि उनका समूह तो छोटा सा है, अतः उन्हें अच्छी तरह योजना की तैयारी करने की कोई आवश्यकता नहीं। सर्व शक्तिमान परमेश्वर की उपस्थिति में अपने झुण्ड को पहुंचाने में यदि चरवाहा अच्छी तरह तैयारी करने में असफल रहता है, तो यह चरवाहे का पाप है।

तुम्हारा समूह तो छोटा सा है, अतः उन्हें अच्छी तरह योजना की तैयारी करने की कोई आवश्यकता नहीं। हा हा हा

जब पौलुस–तिमुथि अध्ययनमाला में अनेकों गतिविधियों की सलाह दी गई हो, तो वे ही गतिविधियां चुनिए जो आपके और आपके झुण्ड की आवश्यकताएं पूरी करती हों, अन्यों पर ध यान न दीजिए।

अपनी योजनाएं लिखिए

कौन सा अध्ययन–पाठ अपने प्रशिक्षाणार्थी के साथ पहले प्रस्तुत करने के लिये चुना है?

____

अपनी आगामी आराधना के लिये अपने कौन सी योजनाएं बनाई हैं?

____

____

आपके प्रशिक्षाणार्थियों ने अपने आगामी आराधना–समय के लिये क्या योजनाएं बनाई हैं?

____

____

____

____

____

निर्देश –10 प्रशिक्षाणार्थियों की सहायता कीजिये कि वे अपनी शिक्षण–शैली में परिवर्तन कर सकें।

यीशु तथा उनके प्रेरितों ने शिक्षण के विभिन्न उपाय अपनाए। पौलुस निवेदन करते हैं कि सभी उसी प्रकार करें। १ कुरिन्थियों १४:२६ में ऐसा लिखा है, "जब तुम इकट्ठे होते हो, तो हर एक के हृदय में भजन, या उपदेश, या अन्य भाषा, या प्रकाश या अन्य भाषा का अर्थ बताना रहता है: सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिये होना चाहिए।" इस प्रकार की सक्रिय सहभागिता में पवित्रात्मा अधिक सामर्थ–शाली रूप से कार्य करता है। पौलुस–तिमुथि पाठ्यक्रम की अध ययनमाला में आराधना से संबंधित सीखने योग्य विभिन्न गतिविधियों का उल्लेख किया गया है।

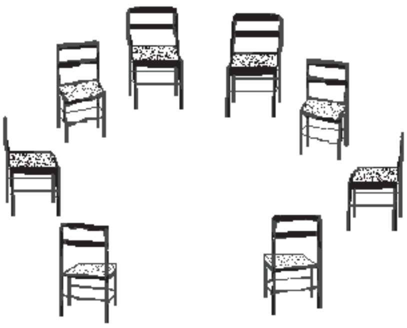

कुर्सियों को गोलाकार या अर्ध–गोलाकार रूप में रखिए ताकि प्रत्येक जन एक दूसरे का चेहरा देख सके।

जब आपस में सवाल जवाब किए जाते हैं तो लोग अधि क बातें सीखते हैं अतः उन्हें स्वतन्त्रतापूर्वक बोलने दीजिए।

एक या दो ही व्यक्ति को हर समय न बोलने दीजिए। इस प्रकार प्रत्युत्तर दीजिए : "अब हम ऐसे जन की बात सुनेंगे जिसने अभी तक कुछ नहीं बोला है। हम चाहते हैं कि हर एक जन अपने विचार प्रकट करे, कुछ उदाहरण भी दीजिए, अथवा प्रश्न पूछ लीजिए।"

शर्मीले लोगों को तिरस्कृत न कीजिए, यदि वे शान्तभाव से बैठना चाहें तो बैठने दीजिए।

छोटे समूहों में, व्याख्यान देना त्याग दें। व्याख्यान बड़े समूहों में व अनुभवी लोगों के मध्य उचित रहते हैं। जब नये चरवाहे व्याख्यान देते हैं, यदि वे युवक हैं, तो अभिमानी हो जाते हैं, डांटते हैं, और तानाशाह जैसा व्यवहार करके मूर्खतापूर्ण नियम बना डालते हैं।

पवित्रशास्त्र सीखने का एक प्रभावशाली उपाय यह है कि बाइबल को नाटकीय शैली में पढ़ा जाए। नये चरवाहों से संबंधित अधिकांश नई अध्ययन–सामग्री में तथा बच्चों से संबंधित सभी पाठों में कम से कम एक बाइबल–कहानी ऐसी सम्मिलित की गई है जिसे नाटकीय–शैली में पढ़ा जा सकता है और उस पर अभिनय भी किया जा सकता है। अन्य लोगों को यदि वे कर सकते हैं, तो अभिनय करने दीजिये या नाटकीय रूप से पढ़ने दीजिए। उदाहरण के लिये : उद्घोषक, कहे हुए शब्दों को छोड़कर, उड़ाऊ–पुत्र की कथा पढ़ सकता है, और अन्य लोग पिता, पुत्र तथा नौकरों द्वारा कहे गये वाक्यों को पढ़ सकते हैं। इस प्रकार कलीसिया के सदस्यगणों द्वारा लघु –नाटिकाएं प्रस्तुत की जा सकती हैं। इससे लोग नाटकों द्वारा बाइबल की सच्चाईयों को अच्छी तरह सीख सकेंगे। यदि वे स्वयं भी नाटकों में भाग लें तो और अधिक अच्छी तरह सीख सकते हैं।

बड़े पैमाने पर यह सब कार्य न कीजिए जिससे आपको अधिक वेश–भूषाओं की तथा अधि क अभ्यास की आवश्यकता पड़े। यदि बड़े स्तर पर कार्य करेंगे तो सदस्यों का ध्यान बाइबल की सच्चाईयों पर न जाकर अभिनय में ही उलझकर रह सकता है।

जब अभिनय करने वाले लोग युवा हों, या बड़ी आयु के लोग हों, तो यह अच्छा होगा कि वे बातचीत को मुखाग्र नहीं करें बल्कि अपने मष्तिष्क में कहानी के मूल विचार को बैठा लें कि उन्हें क्या कहना चाहिये, या क्या करना चाहिये, उदाहरणार्थ : जब उड़ाऊ-पुत्र की कहानी पर नाटक प्रस्तुत किया जा रहा हो, तो उद्घोषक कहानी का सारांश बता दे या कहानी पढ़ दे, तब कहे, "उड़ाउ-पुत्र इस प्रकार कहता है" तब तुरन्त उड़ाउ-पुत्र अपने शब्दों में उस भाग को पढ़े या कहे। दो बच्चे पले हुए बछड़े का अभिनय कर सकते हैं। उनके ऊपर कंबल डाला जा सकता है, और वे बछड़े की आवाज़ करते हुए इधर-उधर चलफिर सकते हैं।

उस प्रभावशाली उपदेश के बारे में सोचें जिसे अक्सर लोग दोहराते हैं, जबकि समुद्र किनारे भीड़ में प्रचार करने के पश्चात् प्रभु यीशु अपने १२ शिष्यों के साथ पहाड़ पर चढ़कर बैठ जाते हैं, जहां न तो कुर्सियां ही थीं और न ही कोई पुलपिट था, वे वहां बैठकर घनिष्ट बातचीत अपने शिष्यों से करते हैं, जिसे हम पहाड़ी उपदेश के नाम से जानते हैं। (मत्ती अध्याय ५-७)।

अपनी योजनाएं लिखिए

अगली बार जब आपका समूह मिले तो उसमें सिखाने के लिये आपने क्या योजनाएं बनाई हैं?

____

____

अगली आराधना समय में आप किस विधि द्वारा सिखाएंगे ताकि विश्वासीयों के साथ बच्चे भी प्रभु का वचन प्रस्तुत करने के लिये सक्रिय रूप से हिस्सा लें?

____

निर्देश 11: बाइबल के अनुसार नये चरवाहों को भेजिए

नये चरवाहों को भेजने का बाइबल के अनुसार तरीका यह है कि उनके सिरों पर हाथ रखा जाए और उन्हें परमेश्वर की सामर्थ के अधीन करके उनके लिये प्रार्थना की जाए।

उनमें बुजुर्गों के समान विशेषताएं होनी चाहिये जिनका उल्लेख १ तीमुथियुस ३:१–७ में किया गया है, इसमें यह भी लिखा है कि वे नये शिष्य न हों। स्थाईरूप से चरवाहे घोषित होने व भेजे जाने से पूर्व उनकी जांच होनी चाहिये।

कुछ कलीसियाओं ने युवा चरवाहों को जिन्होंने बाइबल कालेज से धर्म–वैज्ञानिक उपाधि ले रखी होती है चरवाहे के रूप में नियुक्त कर दिया है लेकिन उनकी जांच नहीं की जाती व परखे हुए नहीं होते, उनमें समाज के प्रति आदर भावना नहीं होती जैसाकि पवित्रशास्त्र की मांग है।

जब अगुवों की नियुक्ती में मनुष्यों द्वारा बनाई गई मांगों को जोड़ दिया जाता है या बाइबल की आकांक्षाओं का पालन करने में चूक हो जाती है, तब परिणाम घातक होते हैं। ये दोनों त्रुटियॉ परमेश्वर के जनों के लिये दु:ख का कारण होती हैं।

नये अगुवों को प्रशिक्षित कीजिए, हालांकि वे बाइबल में लिखित मांगों के अनुसार हाथ रखने व भेजे जाने के योग्य नहीं हैं, क्योंकि उनके पास प्रशिक्षिण नहीं है। लेकिन अपने से अधिक अनुभवी अगुवे के साथ रहकर ऐसे लोग नये होते हुए भी वे अपने परिवारों, खोजियों के छोटे झुण्डों के सदस्य बनते हैं। ऐसे लोगों को औपचारिक रूप से बुजुर्गों के रूप में मान्यता नहीं दी जानी चाहिये पर केवल चरवाहे संबंधी कार्यो को करने का अवसर देते रहना चाहिये।

अपनी योजनाएं लिखिए

जिन नए चरवाहों को आप प्रशिक्षित कर रहे हैं उनमें कौन से जन औपचारिक रूप से प्रेरिताई के लिये भेजे जाने योग्य हो सकते हैं: